भारतीय राजनीति की प्रकृति एवं उभरता स्वरूप

POLS4009 : Politics in India

डॉ0 नरेन्द्र सिंह

सहायक आचार्य

राजनीति विज्ञान विभाग

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार

भारतीय राजनीति की प्रकृति

- राष्ट्रवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि से भारतीय दलीय व्यवस्था का विकास।
- संसदीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था तथा विकास एवं परिवर्तन की राजनीतिक आवश्यकता।
- बहुदलीय व्यवस्था।
- भारत में उदित, विकसित तथा प्रचलित निराली दलीय व्यवस्था।
- भारतीय राजनीति की मुख्य विषेशता प्रकृति, समय और परिस्थितियों के साथ ही परिवर्तित।
- मानवीय संरचना का विकासवादी स्वरूप।
- स्वतंत्रता के पश्चात इसकी प्रकृति एवं स्वरूप में बहुत बदलाव।
- विचार–विमर्श से समस्या का समाधान।
- एक बहुलवादी समाज के साथ ही सामूहिक निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया।
- समूह के रूप में वर्तमान तथा भविष्य के लिय जनकल्याणकारी नीतियों का निर्माण।
- भारतीय राजनीति की गतिशील प्रकति और निर्धारक तत्वों से उद्देश्यों की प्राप्ति।
- राष्ट एवं राज्यों के मध्य सांमजस्य और समन्वयता।
- भारत की विशालता, सांस्कृतिक–धार्मिक अनेकता तथा सामाजिक आर्थिक पिछडापन।
- वैश्विक परिदृश्य में मजबूत विदेश नीति की स्थापना।
- लोकतन्त्र के संरक्षण में विश्वसनीयता एवं विकासवादी स्वरूप।
- सहभागी राजनीति की अपेक्षा सत्ता सहभागिता की प्रबलता।

FIRST LOK SABHA (1952)
(Party wise Representation of Members)

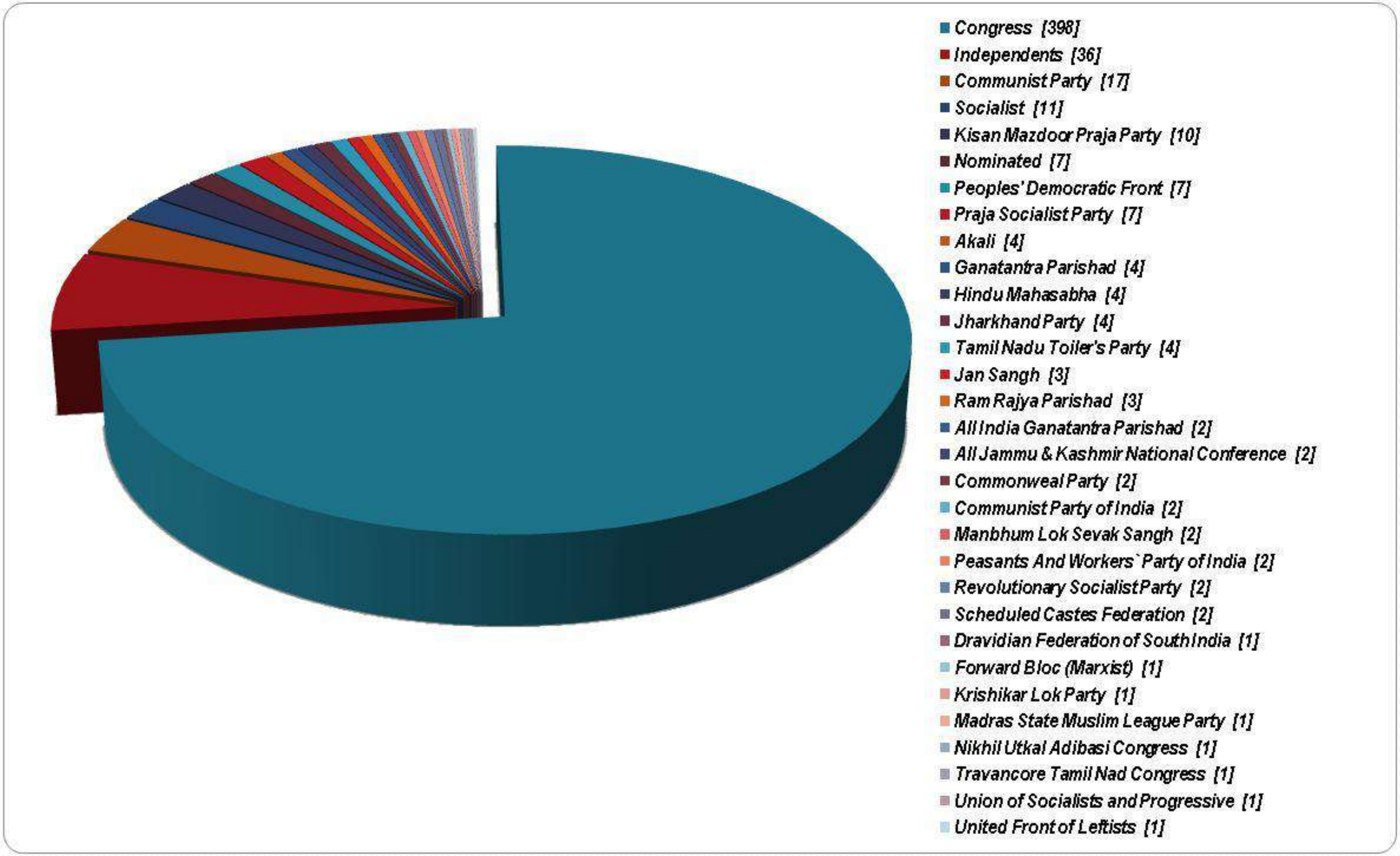

SECOND LOK SABHA (1957)
(Party wise Representation of Members)

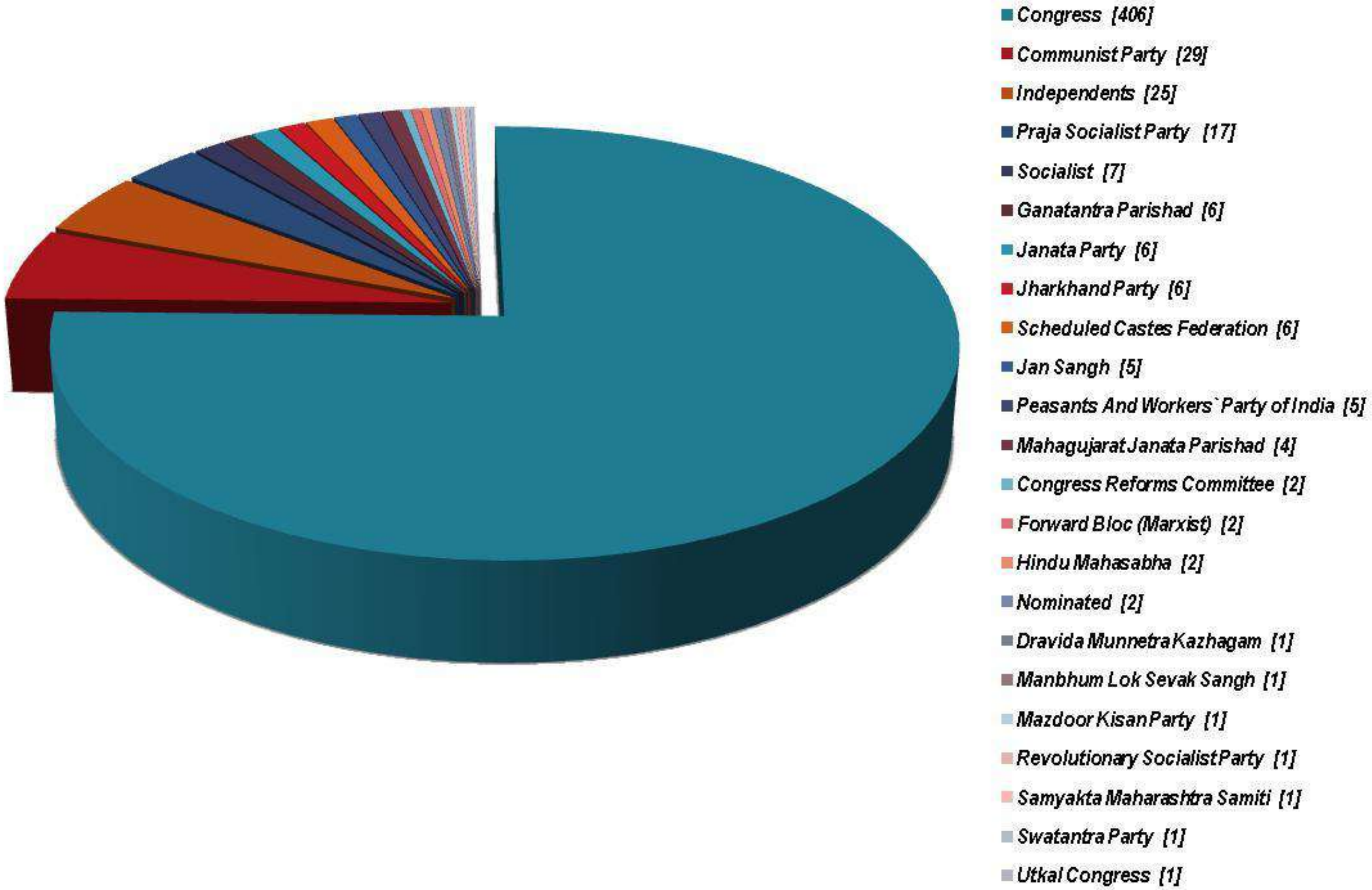

THIRD LOK SABHA (1962)
(Party wise Representation of Members)

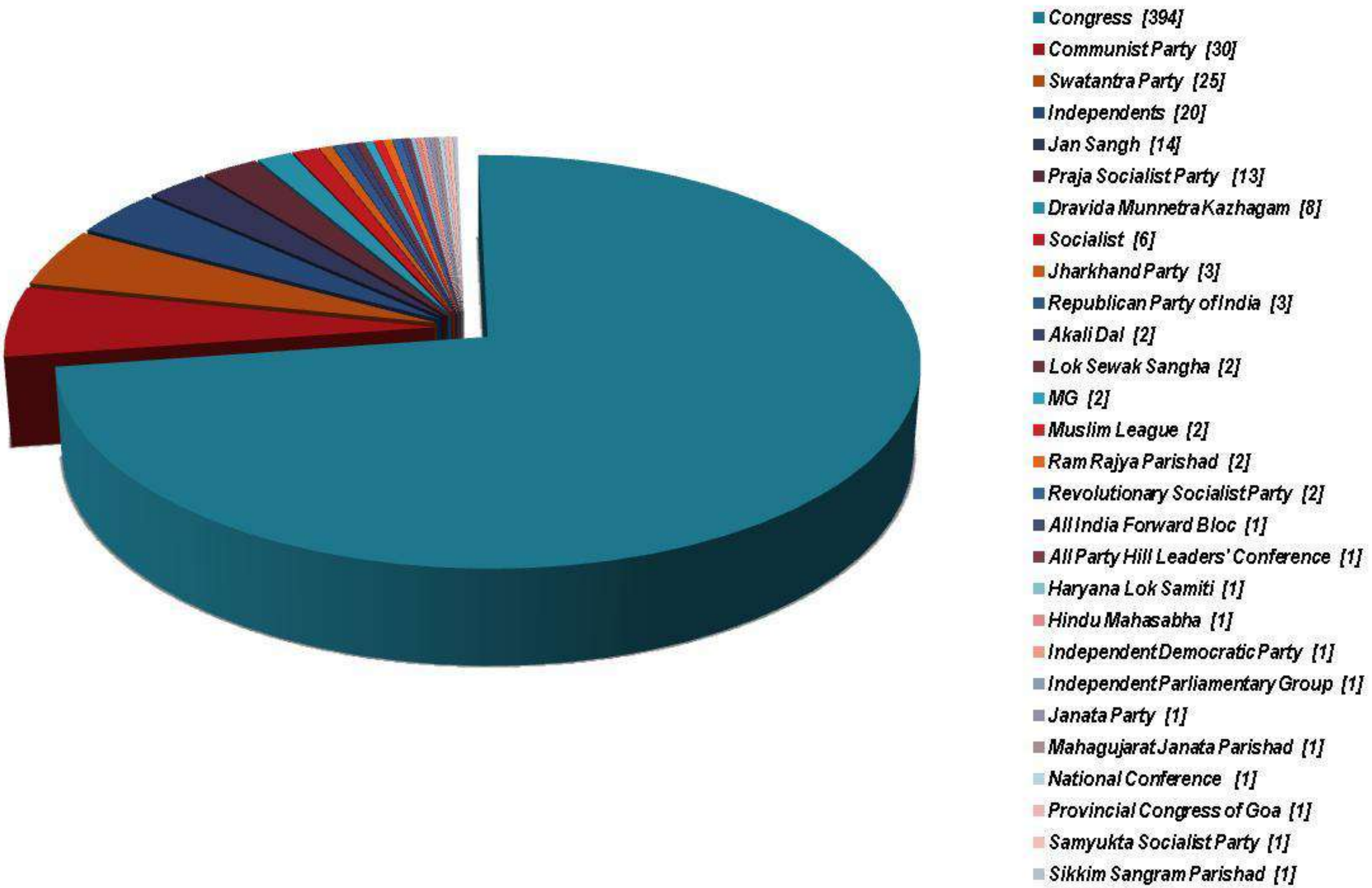

FOURTH LOK SABHA (1967)
(Party wise Representation of Members)

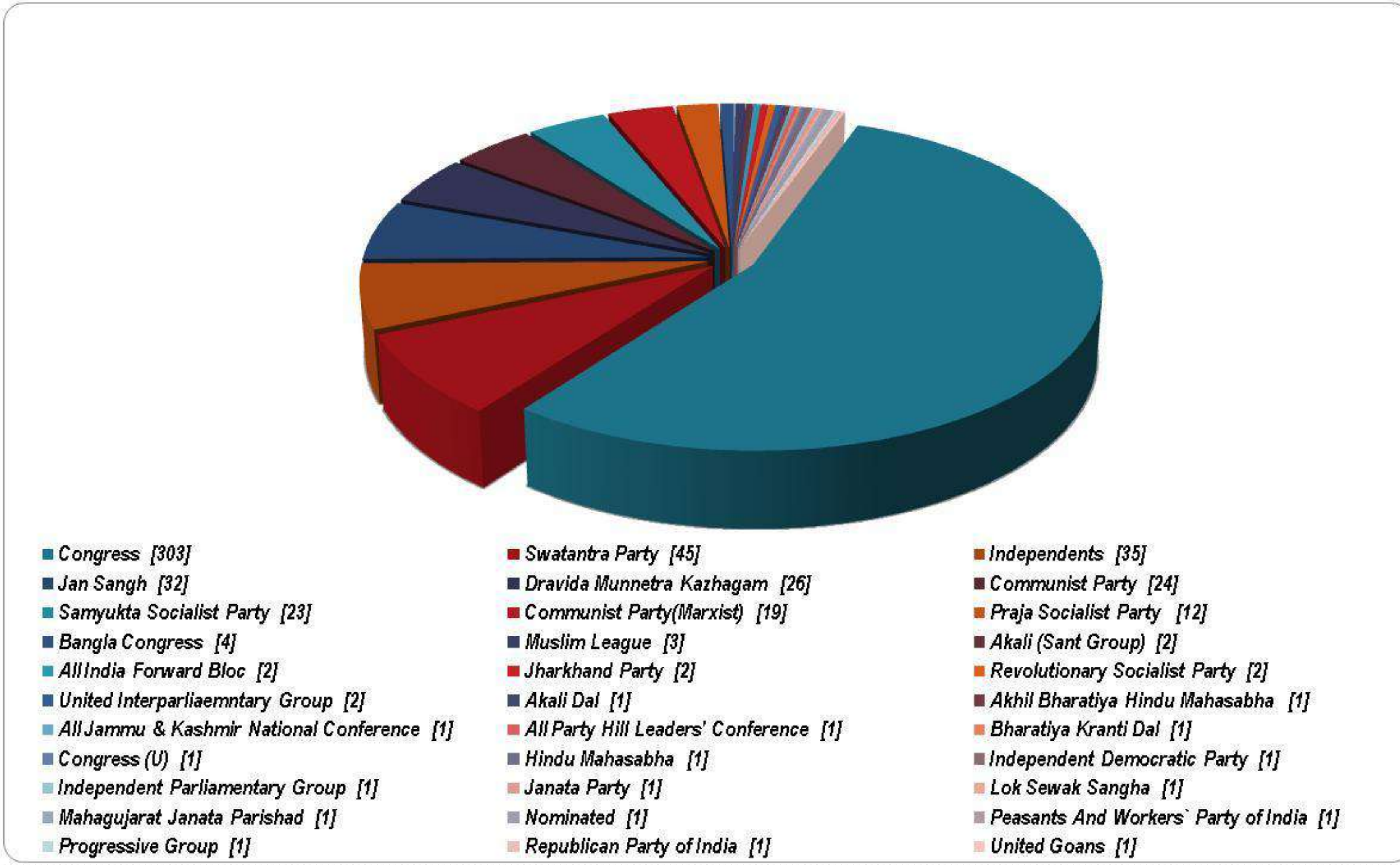

FIFTH LOK SABHA (1971)
(Party wise Representation of Members)

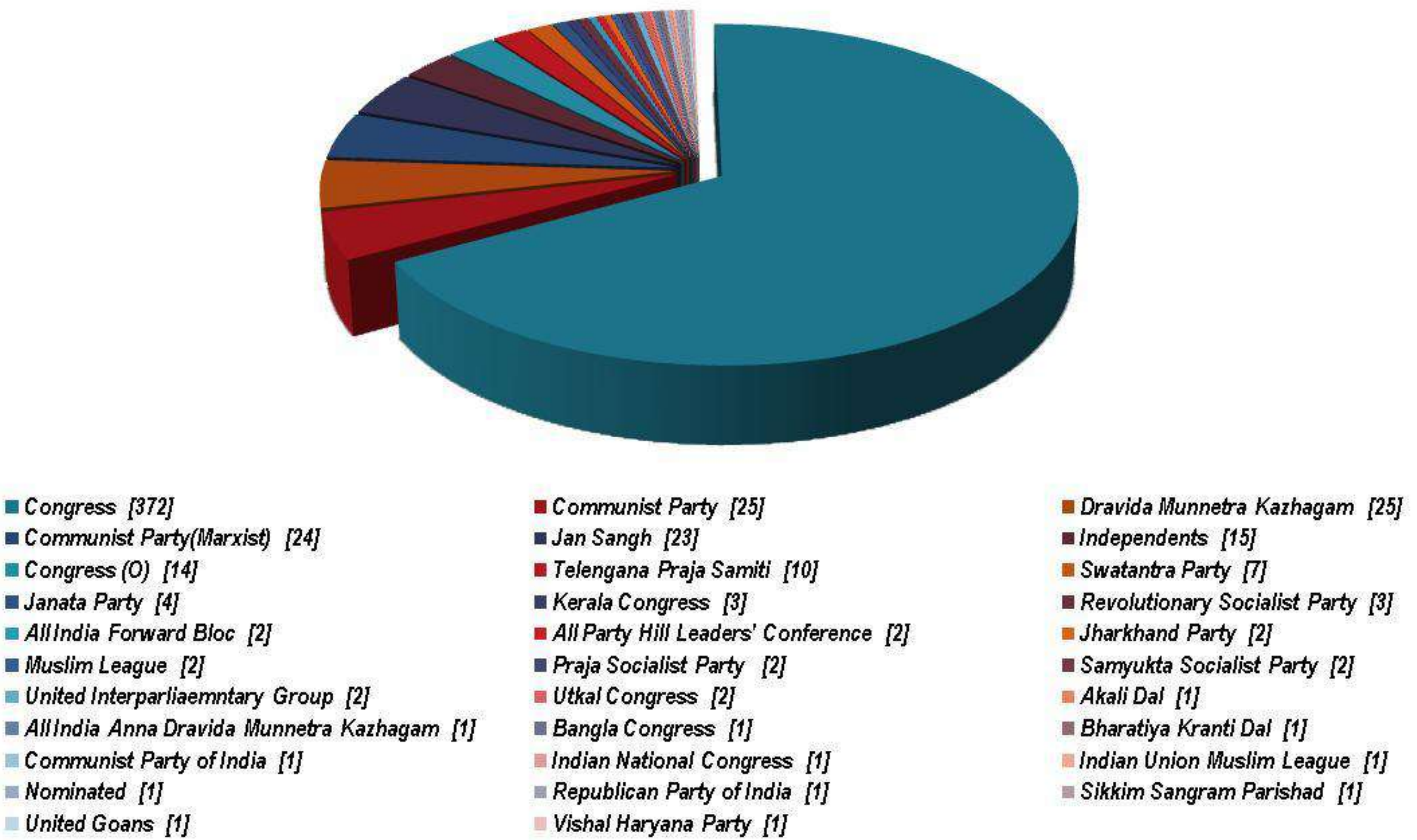

SIXTH LOK SABHA (1977)
(Party wise Representation of Members)

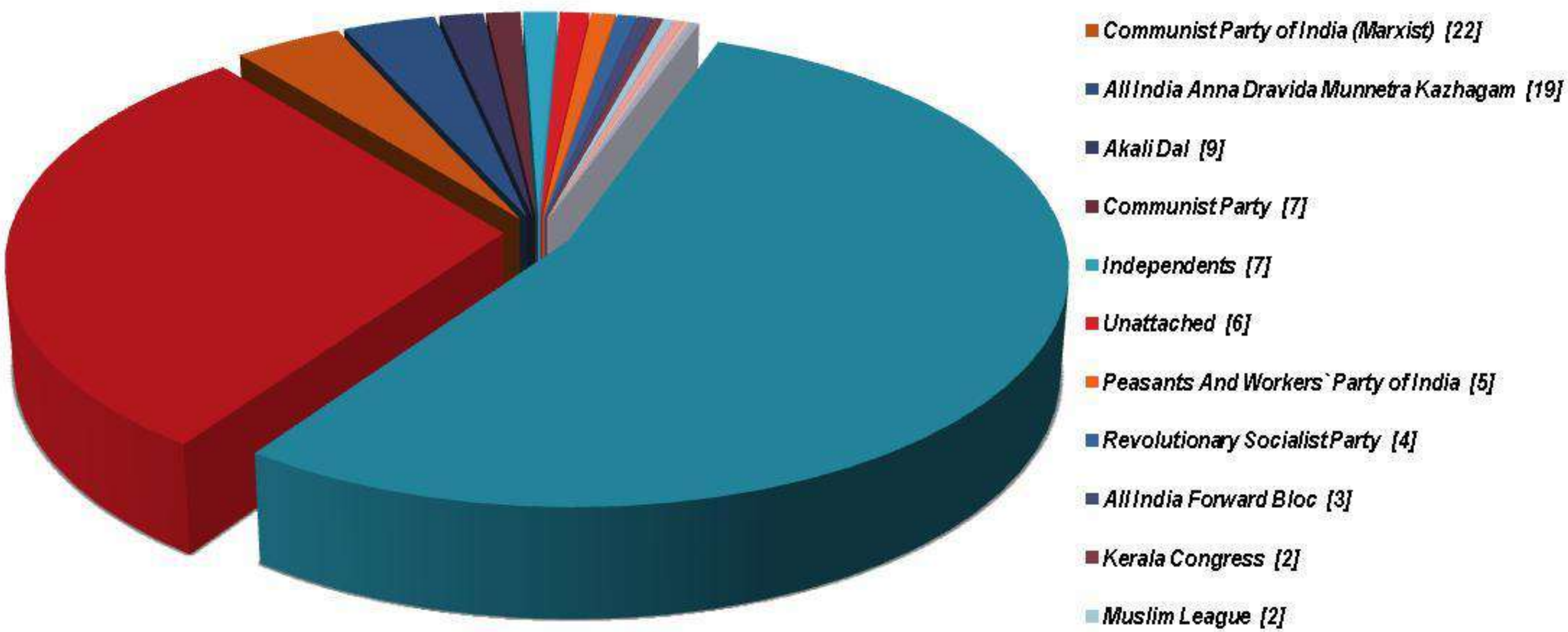

SEVENTH LOK SABHA (1980)
(Party wise Representation of Members)

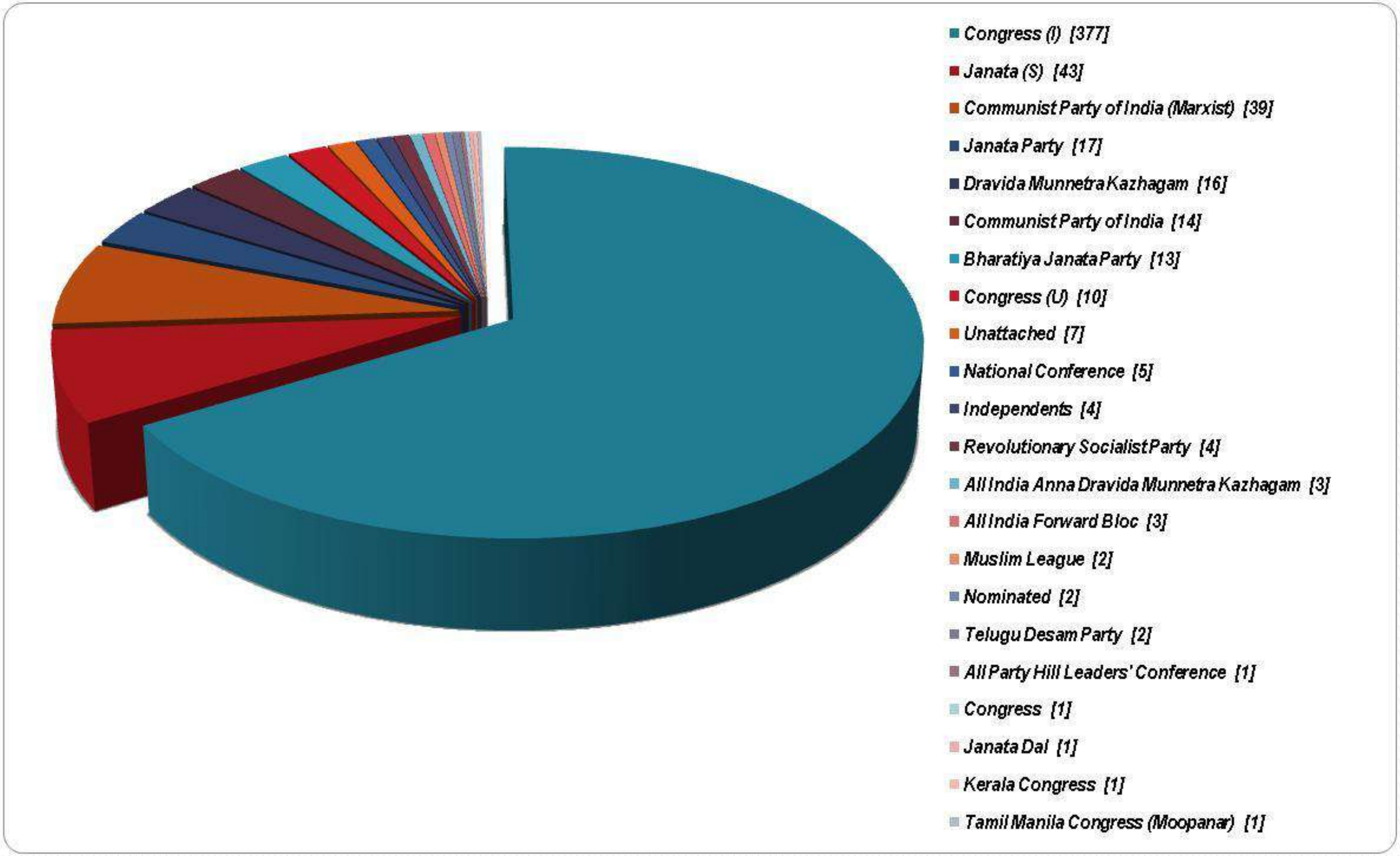

EIGHTH LOK SABHA (1984)
(Party wise Representation of Members)

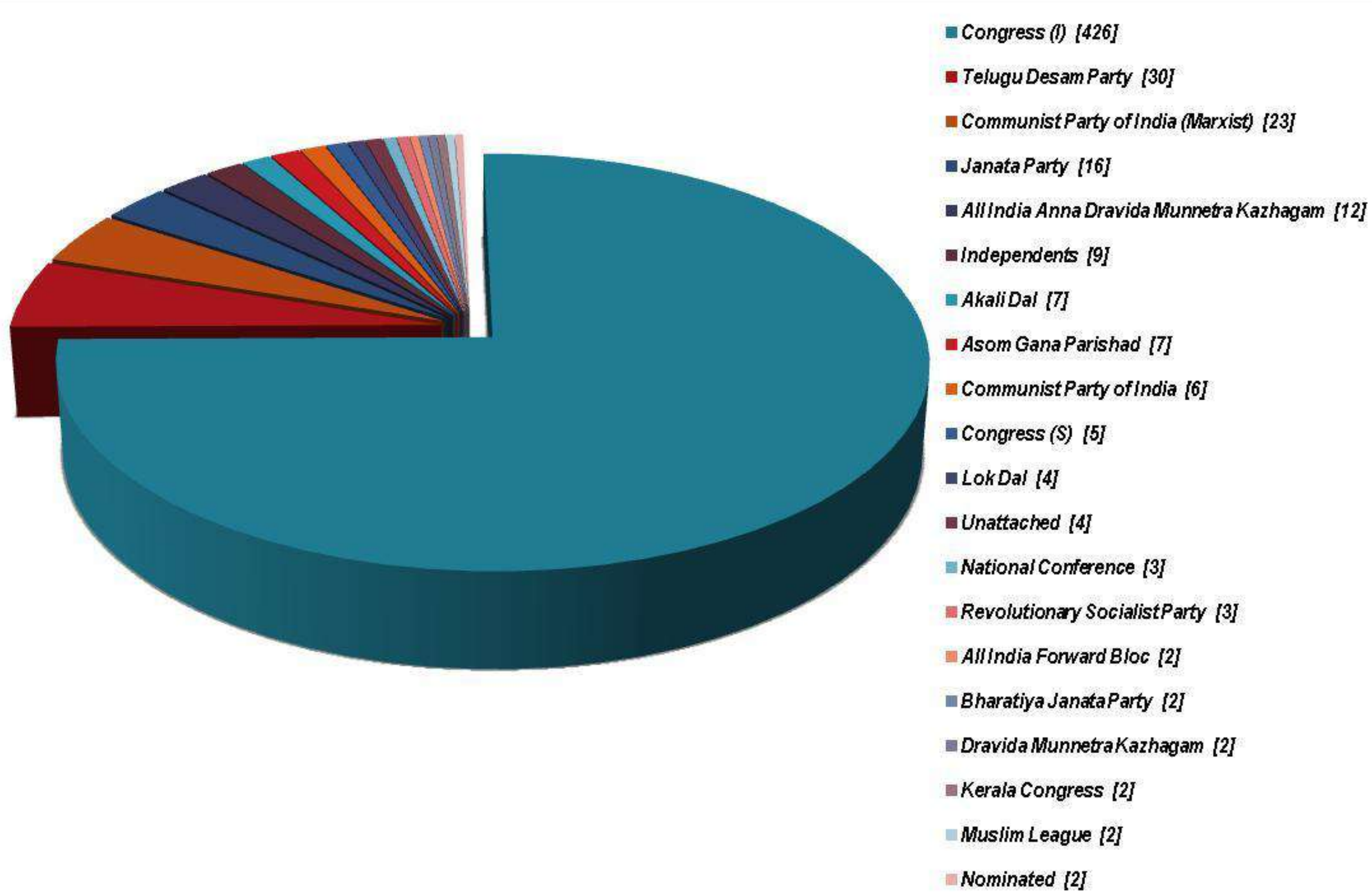

NINTH LOK SABHA (1989)
(Party wise Representation of Members)

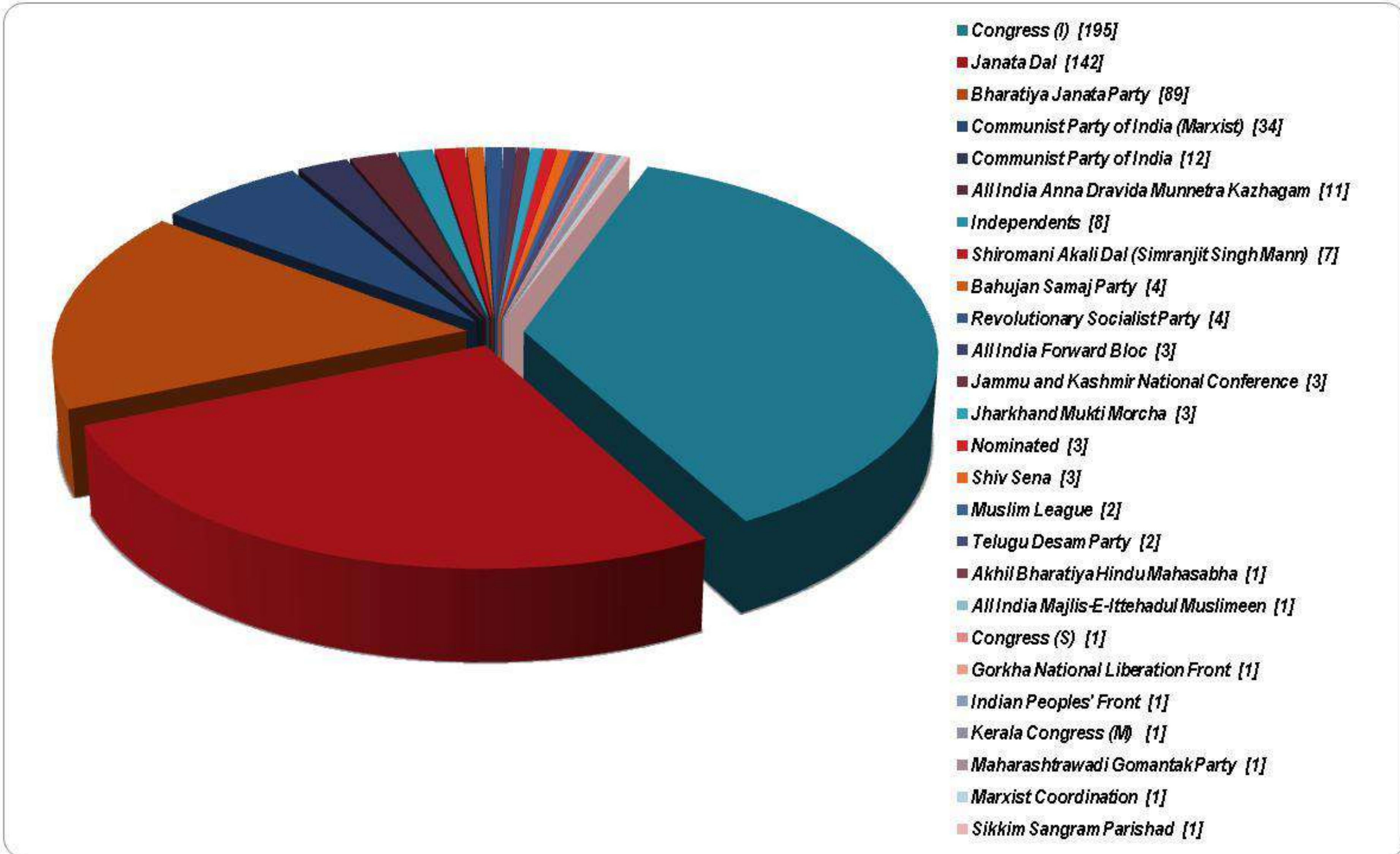

TENTH LOK SABHA (1991)
(Party wise Representation of Members)

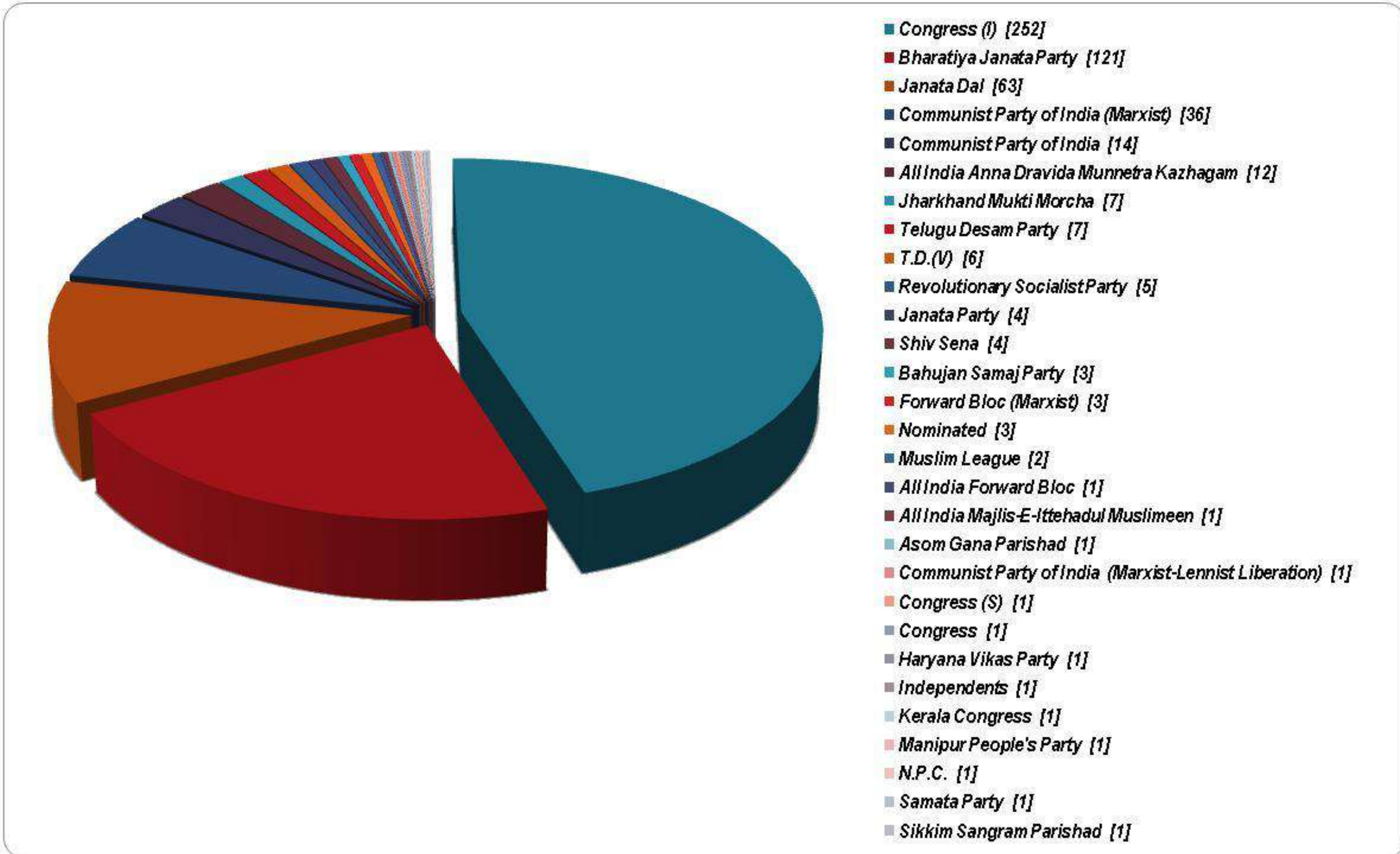

ELEVENTH LOK SABHA (1996)
(Party wise Representation of Members)

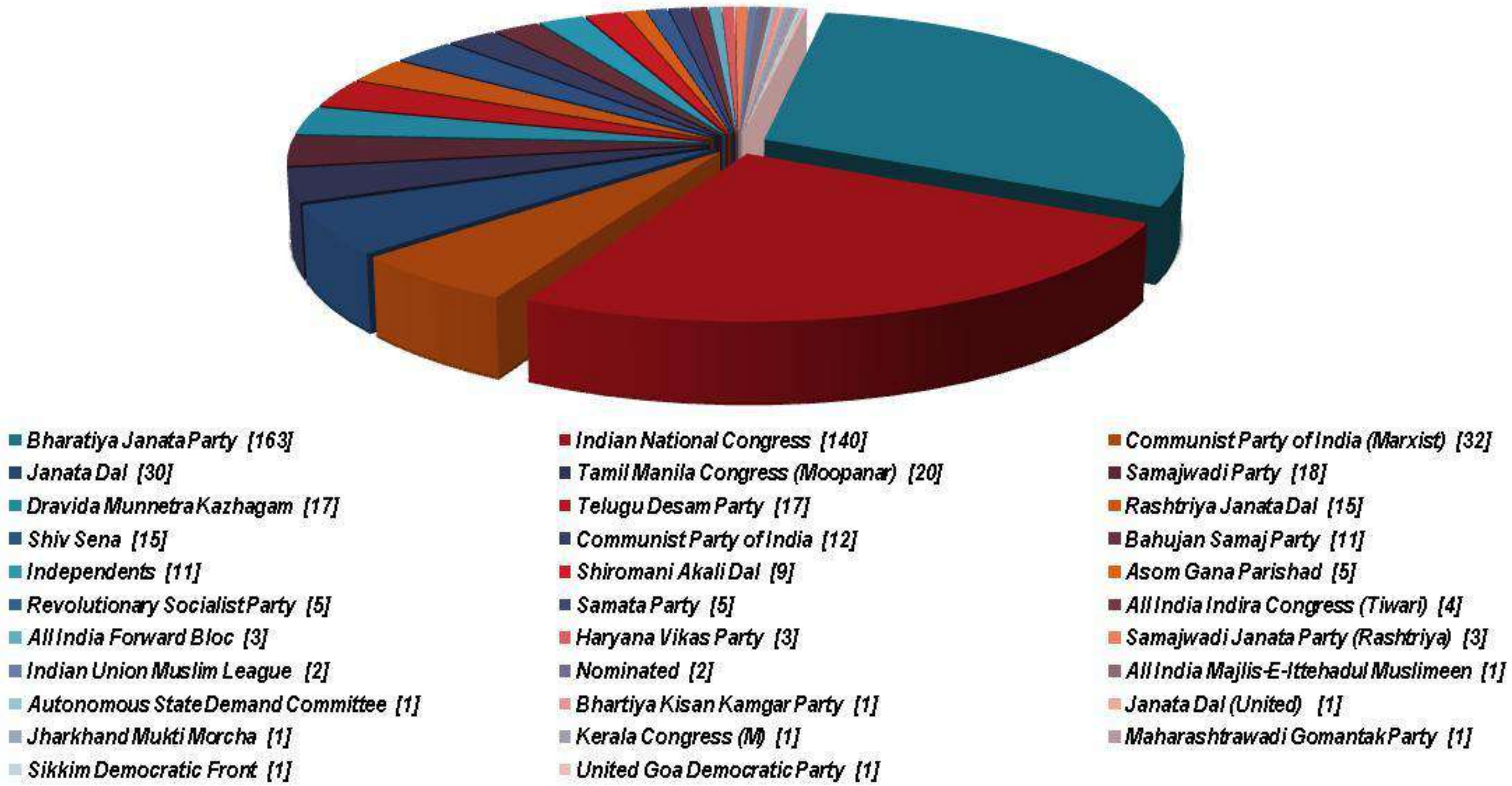

TWELFTH LOK SABHA (1998)
(Party wise Representation of Members)

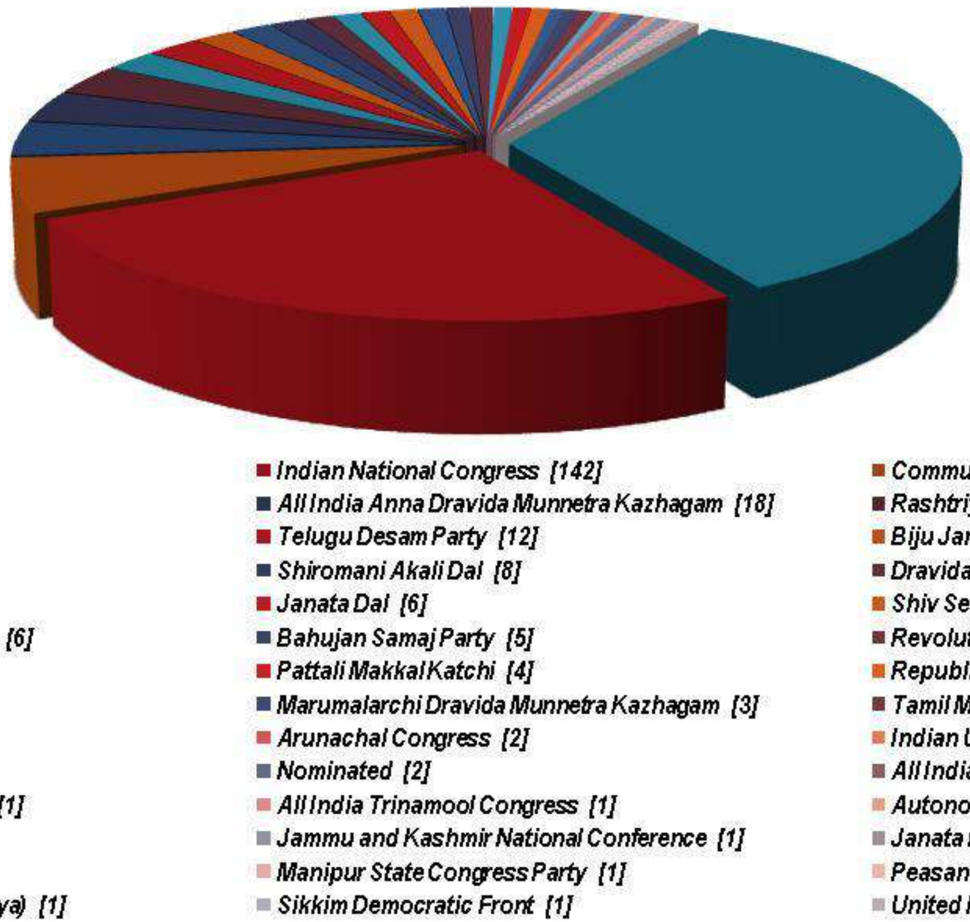

THIRTEENTH LOK SABHA (1999)
(Party wise Representation of Members)

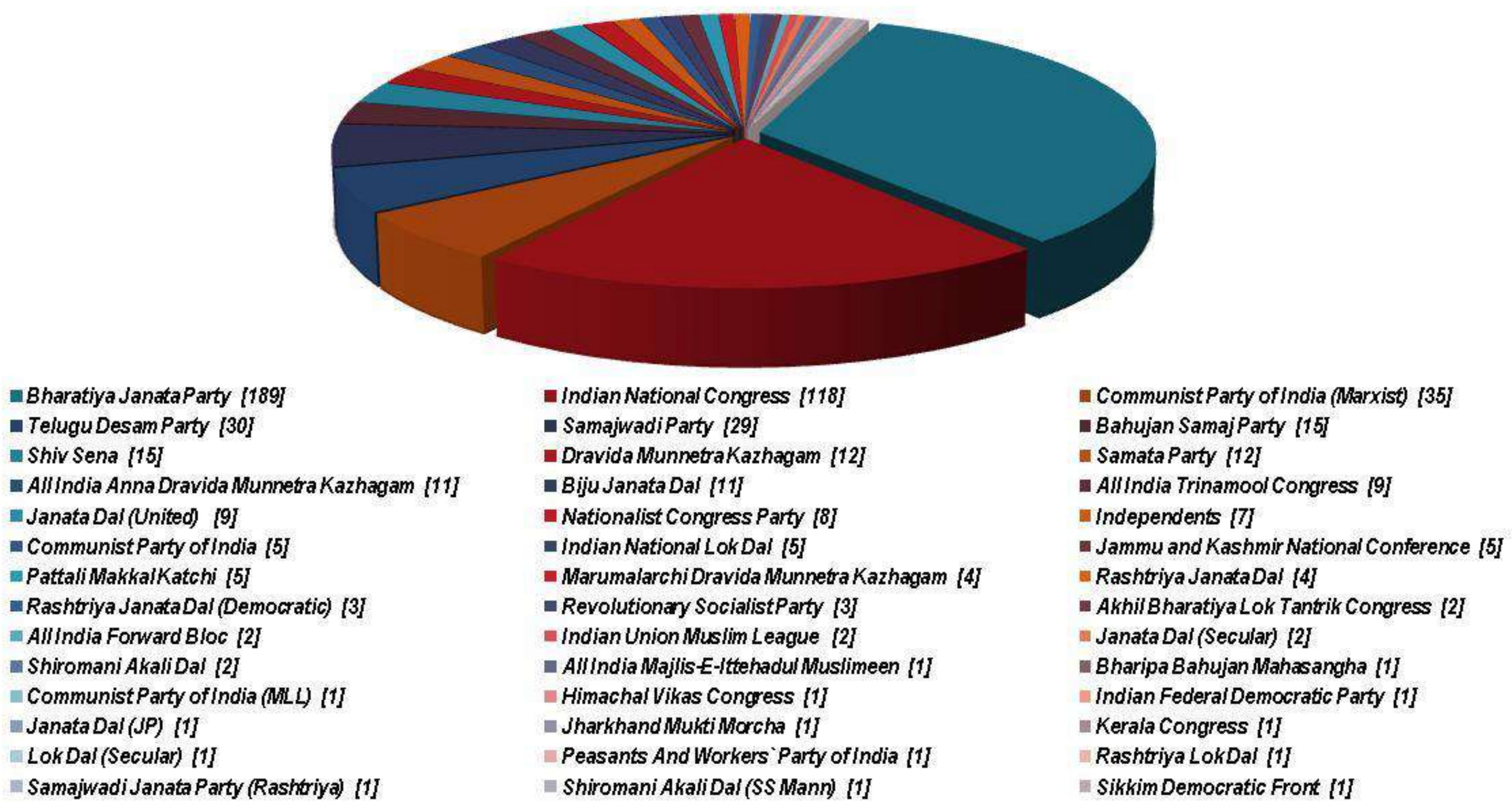

FOURTEENTH LOK SABHA (2004)
(Party wise Representation of Members)

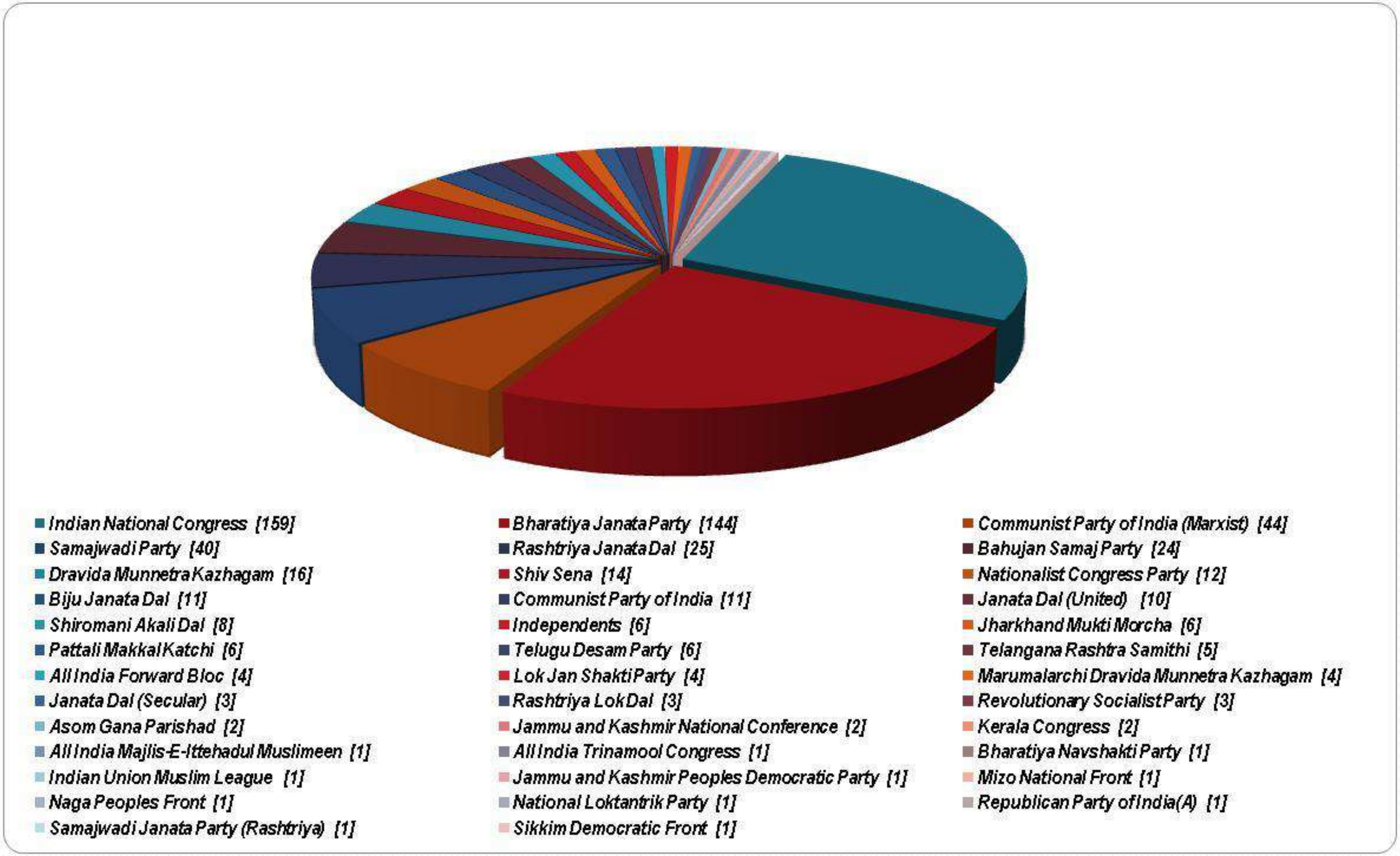

FIFTEENTH LOK SABHA (2009)
(Party wise Representation of Members)

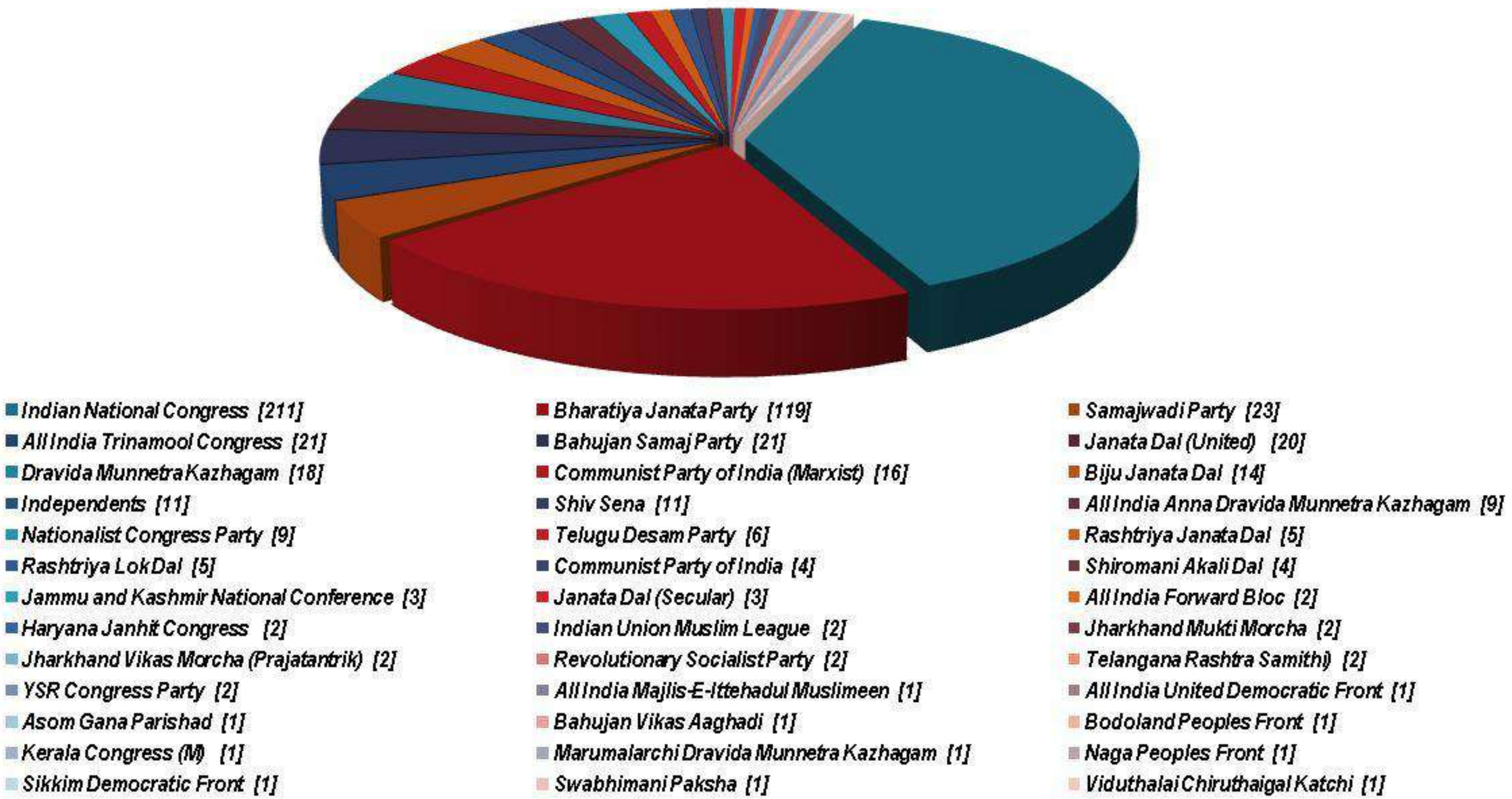

SIXTEENTH LOK SABHA (2014)
(Party wise Representation of Members)

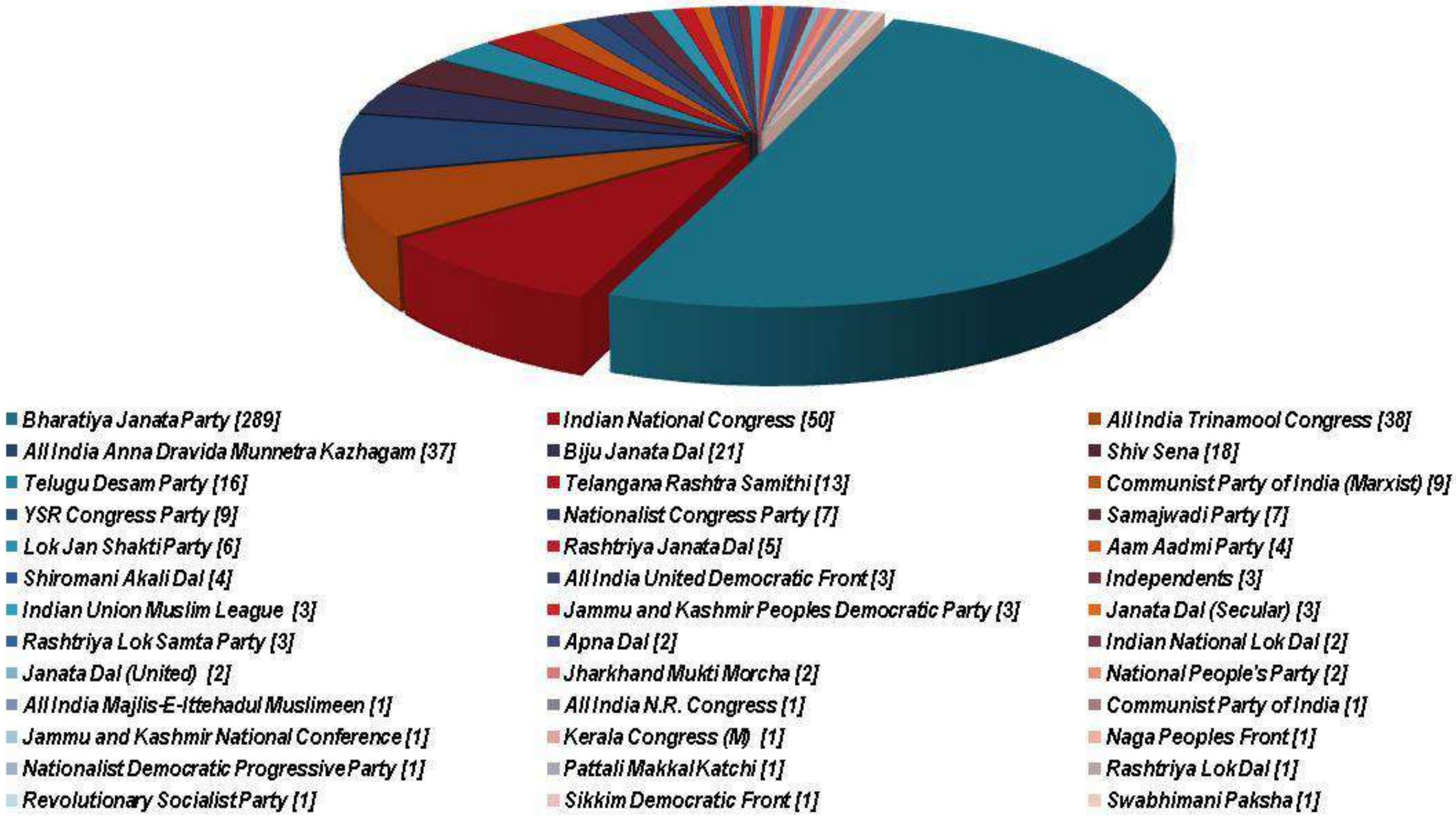

SEVENTEENTH LOK SABHA (2019)
(Party wise Representation of Members)

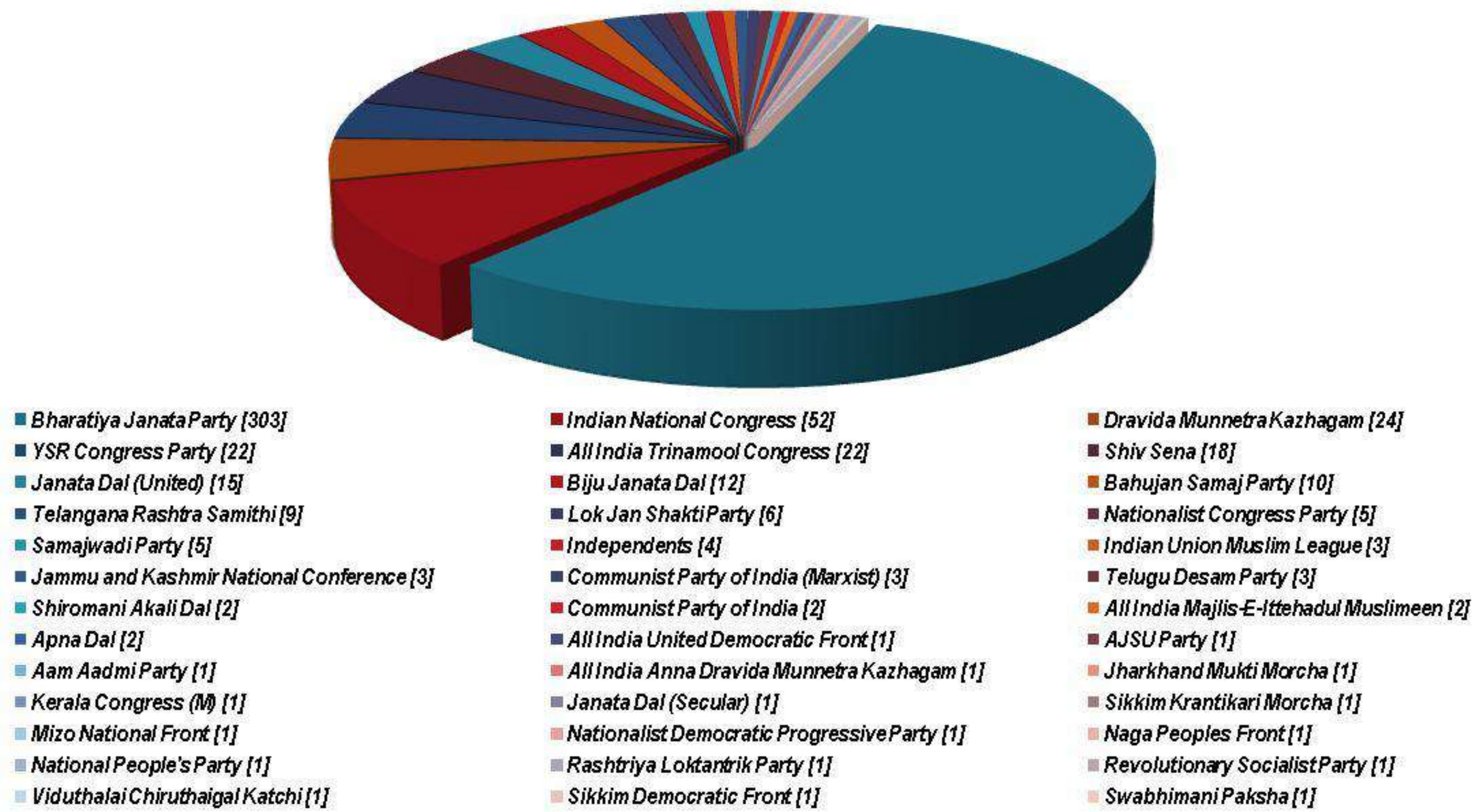

एकदलीय प्रभुत्व की राजनीति

- स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भी अनेक राजनीतिक दल थे, किन्तु राष्ट्रीय आंदोलन में मुख्यतः कांग्रेस।
- राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रणीय भूमिका और संगठित दल के कारण कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व।
- राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास और कांग्रेस पार्टी के इतिहास के मध्य समानता।
- राष्ट एवं समाज के अस्तित्व की भावना।
- एक प्रभुत्व दल के रूप में प्रभावशाली नेतृत्व।
- राष्ट्रवाद के उदय की भावना।
- निर्णय निर्माण की प्रभावशीलता।
- एक प्रतिस्पर्धात्मक दल के रूप में स्थापित।
- राजनीतिक स्थिरता एवं कानून व्यवस्था।
- कांग्रेस को उच्च प्रभावशाली वर्गो का समर्थन।
- प्रभावशाली कार्ययोजना एवं नीतियॉं।
- विकासवादी एवं मिश्रित विचारधारा।
- जनकल्याण, अल्पसंख्यकों के सम्मान, शोषण का विरोध।
- सामाजिक– आर्थिक विकास और परिवर्तन।
- सत्ता का केन्द्रीयकरण।
- भूमि सुधार एवं सार्वजनिक विकास नीति।
- नियोजन नीति के आधार पर अर्थव्यवस्था को सुदढता।
- वैश्विक एवं सार्वजनिक नीतियों का निर्माण।

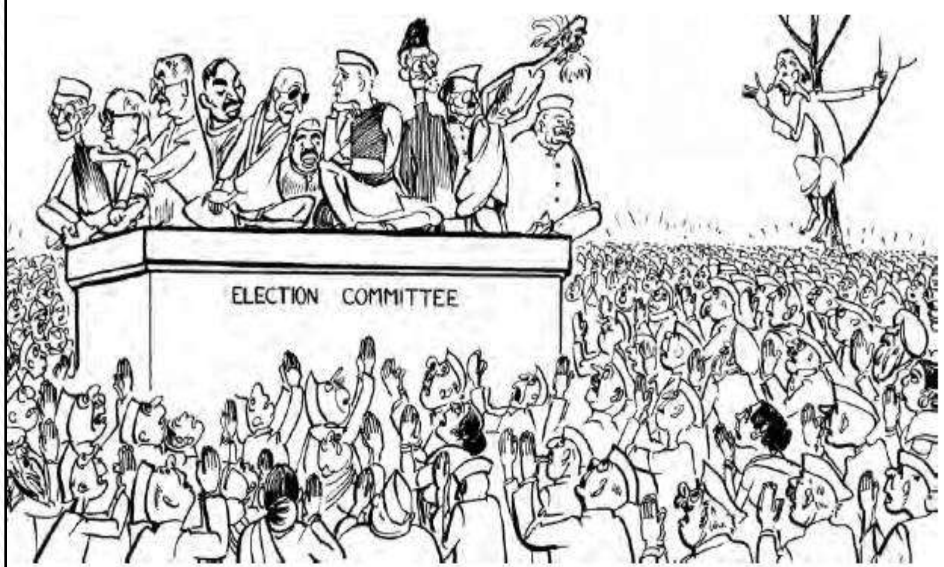

A cartoonist's impression of the election committee formed by the Congress to choose party candidates in 1952. On the committee, besides Nehru: Morarji Desai, Rafi Ahmed Kidwai, Dr B.C. Roy, Kamaraj Nadar, Rajagopalachari, Jagjivan Ram, Maulana Azad, D.P. Mishra, P.D. Tandon and Govind Ballabh Pant.

एकदलीय प्रभुत्व के युग का अंत

- गठबंधन–सरकारों के यग की शुरुआत।
- कायशैली एवं आदर्शो में परिवर्तन।
- मुख्य नेतृत्व का प्रभावहीन होना।
- क्षेत्रवाद, अलगाववाद, साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद का बढता प्रभाव।
- स्वतंत्रता के पश्चात 1977 और 1989 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी क वर्चस्व में कमी।
- सर्वप्रथम 1977 में मोरारजी देसाई एवं चौ0 चरण सिंह के नेतृत्व में जनता पार्टी ने विभिन्न दलों के सहयोग से सरकार बनना।
- 1989 में वी.पी. सिंह और चन्द्रशेखर ने राष्ट्रीय मोर्चा के नेतृत्व में बी.जे.पी. के बाहरी समर्थन से सरकार बनना।
- पुनः 1996 में संयक्त मोर्चा के नेतृत्व में एच.डी. देव गौड़ा और इंद्र कुमार गुजराल ने कांग्रेस के बाहरी समर्थन से सरकार बनाना, लेकिन य सरकारें भी लंबे समय तक नहीं चल पायो।
- 1998 में 12वीं लोकसभा के चुनावों के बाद अटल बिहारी वाजपेयो के नेतृत्व में गठबंधन सरकार।
- राज्यों में बढती स्वायत्ता की भावना।

- 1999 में 13वीं लोकसभा में अटल बिहारी वाजपेयो के नेतृत्व में गठबंधन सरकार का पुनः स्थापित होना।
- भारतीय राजनीति की दिशा एकल प्रभुत्व से बहुदलीय व्यवस्था अथवा गठबंधन–सरकारों पर आधारित।
- चुनावी सफलता के लिय धर्मनिरपेक्षता, जातिवाद तथा क्षेत्रवाद आदि से समक्षौते करना।
- समाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के स्थान पर निरंकुशवाद तथा अलगाववाद की भावनाओं को प्रोत्सहान।

- संगठन में आन्तरिक कलह।
- शक्तिशाली वर्गों के दवाब के कारण प्रभावशाली नीतियां का लागु न होना।
- शक्तियां का केन्द्रीकरण।
- असन्तोष की राजनीति का उदय।
- वैचारिक अस्पष्टता और आन्तरिक लोकतन्त्र की कमी।

राष्ट्रीय दलों के प्रभाव में गिरावट

- व्यक्तिनिष्ठ नेतृत्व एवं प्रभावहीन नीतियों के कारण।
- क्षेत्रीय दलों की प्रभावशील काय प्रणाली।
- आन्तरिक लोकतन्त्र का अभाव।
- वोट बैंक की राजनीति के कारण नैतिक मूल्यों की पतन।
- सत्ता प्राप्ति के लिय उचित और अनुचित साधनों का प्रयोग।
- राजनीतिक दलों में आत्मविश्वास की कमी।
- भारतीय राजनीति में बढती विचारहीनता, अनुशासनहीनता, संगठनहीनता और मूल्यहीनता।
- राजनीतिक दलों में आन्तरिक घटकवाद, फूट, विभाजन और व्यक्तिगत स्वार्थ।
- राजनीतिक दलों का व्यवहार।
- देश की एकता, अखण्डता एवं स्वतंत्रता से उपर निहित स्वार्थ की भावना।
- क्षेत्रीय समस्यों पर कम महत्व।
- दलों में आन्तरिक खिचाव एवं गुटबाजी।
- राजनीतिक स्थिरता का अभाव।
- साम्प्रदायिकता के साथ ही जातिवाद तथा क्षेत्रवाद।
- लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की विशेष भूमिका।

बहुदलीय राजनीति का बढता प्रभाव

❖ लोकतंत्र न केवल वयस्क मताधिकार सुनिश्चित करता है, बल्कि राजनीतिक प्रक्रिया में भी भागीदारी सुनिश्चित करता है। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस पार्टी केंद्र और राज्यों में लंबे समय तक सत्ता में रही, फिर भी कांग्रेस को विकल्प प्रदान करने के उद्देश्य से, कई नए दलों का गठन और गठबंधन सरकारों के कारण नय–नय राजनीतिक दलों का उदय हो रहा है।

- ➢ बहुदलीय व्यवस्था एवं जनता पार्टी के अस्तित्व से नवीन विचार प्रणाली की शुरूआत।
- ➢ राज्यों की स्वायत्ता से गठबंधन सरकारों का पर्दापण।
- ➢ बहुदलीय व्यवस्था से लोकतांत्रिक प्रक्रिया का मजबूत होना।
- ➢ अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ना।
- ➢ सार्वभौमिक एवं जनकल्याण आधारित नीतियों का निर्माण।
- ➢ स्थायित्ववादी एवं समन्वयवादी सरकारों का उदय।
- ➢ मतदान करते समय विकल्प।
- ➢ क्षेत्रिय समस्या का निदान एवं विकास।
- ➢ जनता में आत्मविश्वास की भावना।
- ➢ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा।

- क्षेत्रीय दलों के बढते प्रभाव से क्षेत्रीय दल कई राज्यों में शासन कर रहे हैं और केंद्र सरकार में सत्तारूढ़ गठबंधन का भी हिस्सा हैं।
- दलबदल, राष्ट्रपति शासन, चुनाव संबंधी हिंसा आदि एक दुर्लभ वस्तु बन गई है।
- सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, पंचायती राज अधिनियम ने वास्तव में आम जनता को सशक्त और प्रबुद्ध किया है।
- बहुदलीय व्यवस्था से नैतिक मूल्यों की गिरावट में रोक।
- जाति, क्षेत्र, धर्म अभी भी चुनावी राजनीति में निर्णायक भूमिका में।
- चैतन्य एवं जागरूकता की प्रबलता।
- जनता एवं सरकार के मध्य आपसी तालमेल।

क्षेत्रीय दलों का बढ़ता प्रभाव

❖ भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की संख्या में वृद्धि के साथ, उनका महत्व भी बढ़ रहा है:–

- पंजाब में लोक इंसाफ पार्टी, शिरोमणि अकाली दल, पंजाब एकता पार्टी, पंजाब फ्रंट, रेवोल्यशनरी मार्कसिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया,
- जम्मू–कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी,
- हरियाणा में जे.जे.पी., एस.एच.पी., इंडियन नेशनल लोकदल, एच.वी.पी., एच.आर.पी.
- उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, राष्ट्रीय लोकदल, पी.एस.पी.
- उत्तराखण्ड में य.के.डी.
- दिल्ली में आम आदमी पार्टी
- बिहार में राष्ट्रीय जनता दल, जे.डी.य., लोक जनशक्ति पार्टी, हिन्दुस्तान आवाम मोर्चा
- उड़ीसा में बीजू जनता दल, पी.पी.आई., ए.आई.एफ.बी., स्वतंत्र पार्टी, जनता पार्टी
- असम में असम गण परिषद, ए.पी.पी., ए.बी.जे.पी., ए.जी.पी., ए.जी.एस.पी.
- आंध प्रदेश में तेलुगू देसम पार्टी, वाई.एस.आर. कांग्रेस पार्टी, टी.डी.पी., जे.एस.पी.
- पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, डी.के., डी.एम.के. और ए.आई.डी.एम.के., आर.एस.पी.
- तमिलनाडू में ए.आई.एम.एम.के., ए.आई.एल.डी.एम.के., ए.आई.एम.एल., ए.आई.एफ.एम.के., ए.एम.एल.
- महाराष्ट में शिवसेना, पी.डब्ल्य.पी., पी.एस.पी., एस.एस.पी., सी.पी.आई.
- गोवा में जी.एफ.पी., एम.जी.पी., य.जी.पी., य.जी.डी.पी., जी.एस.एम.
- अरुणाचल में अरुणाचल कांग्रेस, एन.पी.पी., पी.पी.ए.
- मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट, ई.आई.एन.सी., एम.पी.सी., जेड.पी.एम., एम.डी.एफ. आदि।

यद्यपि य पार्टियां क्षेत्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी हम राष्ट्रीय स्तर पर भी उनकी भूमिका और महत्व को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं।

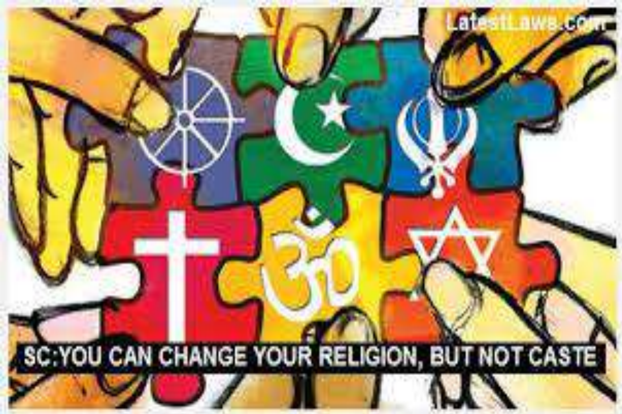

साम्प्रदायिकरण की राजनीति

- अंग्रेजों द्वारा बोई गई सांप्रदायिकता के बीज का पेड बडे रूप में विकसित हो गया है और इसकी जड़ें भारत की मिट्टी में काफी गहरी हो गई हैं।
- स्वतंत्रता के बाद साम्प्रदायिकता से छुटकारा पाने के उद्देश्य से भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोशित किया गया और लोगों को अनुच्छेद 25 से 28 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया। इसके अलावा, सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व को समाप्त कर दिया गया और संयक्त निर्वाचन प्रणाली का प्रावधान किया गया।
- आज तक, हजारों सांप्रदायिक झड़पें हुई हैं, जिसके परिणामस्वरूप हजारों लोग मारे गए हैं और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हो गई है।
  - 1961 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
  - 1963 में श्रीनगर
  - 1966 में महाराष्ट्र
  - 1968 में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और असम में,
  - 1969 में इलाहाबाद
  - 1970 में भिवंडी
  - 1979 में दिल्ली, इलाहाबाद
  - 1987 में मेरठ में
  - 1989 भागलपुर
  - 1989, 1990 में वाराणसी
  - 1992 में वाराणसी और मुम्बई
  - 2002 में गुजरात
  - 2006 में अलीगढ़
  - 2010 में पश्चिम बंगाल के देगंगा
  - 2013 मुजफ्फरनगर आदि कई साम्प्रदायिक घटनाएं हुईं।
- वास्तव में विभिन्न राजनीतिक दल एसे मुद्दों को जीवित रखना चाहते हैं, ताकि वे अपने राजनीतिक हितों को बढ़ावा देने के लिए निर्दोश लोगों का शोषण करने में सक्षम हों।
- इन दिनों संसद में धार्मिक नारे लगाए जा रहे हैं और देश के प्रति उनकी वफादारी के बजाय, वे अपने धर्म के प्रति अपनी वफादारी व्यक्त करते हैं। धार्मिक प्रतीकों का उपयोग राजनीतिक उपकरण के रूप में किया जा रहा है और धर्मनिरपेक्ष भारत यह सब मूक दर्शक के रूप में देख रहा है।

जातिवाद की राजनीति

- यद्यपि भारत के संविधान ने जाति, रंग, पंथ, धर्म आदि के आधार पर किए गए भेदभाव को समाप्त कर दिया है, फिर भी राजनीति पर जाति की पकड भारत में काफी मजबूत है।
- जय प्रकाश नारायण के अनुसार, जाति भारत की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भारत में जाति का राजनीतिकरण किया गया है।
- चुनाव के लिए उम्मीदवारों का चयन करते समय उनकी जाति पर विचार किया जाता है। जाति लोगों के मतदान व्यवहार को भी प्रभावित करती है और मंत्रिपरिषद में उन्हें शामिल करते समय व्यक्ति की जाति को भी देखा जाता है।
- वोट की जाति आधारित नारे लगाने के लिए जैसे कि 'जाट की बेटी जाट को, जाट की वोट जाट को' को कहा जाता है। मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने के लिए वी0 पी0 सिंह के फैसले के बाद भारत में जाति युद्ध काफी तेज हो गया। क्योंकि इसने भारतीय समाज की समरूपता को प्रभावित कर दिया।
- आज भी उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में जाति की लड़ाई काफी तेज है, लेकिन यह सब भारत की राजनीति के लिए बुरा है।
- भारतीय समाज दिन–प्रतिदिन जाति, धर्म, नस्ल आदि के आधार पर विभाजित होता जा रहा है और अनील के बुरे परिणाम काफी हद तक स्पष्ट हैं।

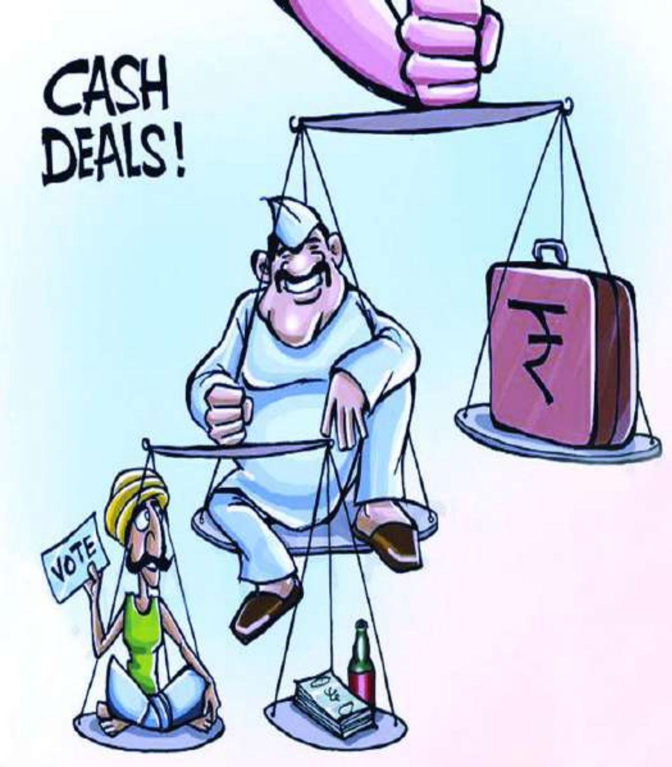

मनी पावर की राजनीति का बढ़ता प्रभाव

- भारत में राजनीति भी धन शक्ति के प्रभाव से मुक्त नहीं है, अमीर लोगों की राजनीति पर मजबूत पकड है।
- चुनावों के दौरान वे राजनीतिक दलों को धन के साथ मदद करते हैं और चुनावों के बाद वे लाभ भी प्राप्त करते हैं।
- हालांकि चुनाव आयोग ने चुनाव के दौरान खर्च किए जाने वाले पैसे की ऊपरी सीमा तय कर दी है, फिर भी वास्तव में खर्च किए गए पैसे निर्धारित सीमा से कई गुना अधिक हैं और इसका बड़ा हिस्सा काले धन और काले धन की राजनीति से आता है।
- आज, निष्पक्ष या बेईमानी के माध्यम से, राजनेता जितना संभव हो उतना पैसा इकट्ठा करने की कोशिश करते हैं, इसलिए, प्रमुख घोटालों में राजनेताओं की भूमिका को खारिज नहीं किया जा सकता है।
- वे धन शक्ति के उपयोग के साथ नामांकन प्राप्त करते हैं और नामांकन प्राप्त करने के बाद चुनाव जीतने के लिए उन्हें करोड़ों खर्च करने पड़ते हैं।
- चुनाव जीतने के बाद, उन्हें फिर से मंत्री बनने के लिए अपनी पार्टी के आकाओं को खुश करना पड़ता है। उच्च पदों पर नियुक्त होने के बाद, राजनेता अगले चुनावों के लिए जितना संभव हो उतना पैसा इकट्ठा करने की कोशिश करते हैं।
- इस तरह, उनकी सार्वजनिक सेवा स्वय सेवा बन जाती है। इसलिए, राजनीति को धन शक्ति के बुरे प्रभाव से मुक्त करने की आवश्यकता है।

सामूहिक रैलियों की राजनीति

- भारतीय राजनीति में जन–रैलियों की राजनीति ने अपना विशेष स्थान बनाया है।
- सत्ताधारी दल अपनी लोकप्रियता और ताकत दिखाने के उद्देश्य से सार्वजनिक रैलियां करते हैं।
- इसी तरह, विपक्षी दल सरकार की कमियों को उजागर करने के लिए सार्वजनिक रैलियां करते हैं।
- वास्तव में बड़े पैमाने पर रैलियों की राजनीति 1975 में शुरू हुई जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने आंतरिक आपातकाल लगाया।
- श्रीमती गांधी के समर्थक ने आपातकाल लगाने के समर्थन में दिल्ली में जन–रैलिया आयोजित कीं। इससे पहले, श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में सरकार की कमजोरियों को उजागर करने के उद्देश्य से देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर रैलियों का आयोजन किया गया। इसके बदले में, कांग्रेस पार्टी ने अपने जनसमर्थन को साबित करने के लिए बड़े पैमाने पर रैलियों का आयोजन किया और बंदूक चलाने की यह प्रक्रिया काफी समय तक जारी रही।

- जन–रैलियों की यह राजनीति भारतीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण और अविभाज्य विशेशता बन गई है।
- अब अलग–अलग राजनीतिक दल अपनी पार्टियों की सरकार के एक साल, दो साल, पांच साल आदि के पूरा होने पर बड़े पैमाने पर रैलियां करते हैं और नेताओं के जन्मदिन बड़े स्तर पर मनाए जाते है।
- सामूहिक रैलियों के परिणामस्वरूप, आम लोगों को बहुत असुविधा का सामना करना पड़ता है और कभी–कभी जब य रैलियां हिंसक भी हो जाती हैं।

- सामूहिक रैलियों द्वारा राजनीतिक दल अपने पक्ष में मतदान के लिय प्रेरित करना।
- सामूहिक रैलियों से जनता तथा सरकारों के मध्य आपसी तालमेल।
- राजनीतिक दलों की नीतियों का प्रचार प्रसार।
- दलों का जनता से प्रत्यक्ष संवाद।
- विपक्षी दल की रैलियों से सरकार को चेतावनी।

मूल्य–आधारित राजनीति में गिरावट

स्वतंत्रता आंदोलन कुछ मूल्यों और सिद्धांतों के आधारों पर लड़ा गया था, इसलिए इसको बनाए रखने के लिए कई लोगों ने बलिदान दिए तथा लाखों लोग जेल गए और हजारों देशभक्त मारे गए। स्वतंत्रता के बाद पहले बैच के नेताओं ने देश के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि उनका उद्देश्य आत्म विकास की अपेक्षा सार्वभौमिक विकास पर केन्द्रित था, लेकिन आज के दौर में जनप्रतिनिधियों की कोई विचारधारा नही है। जो उनके नैतिक मूल्यों को दर्शाता है।

- राजनीतिक शक्ति का उद्देश्य लोगों के कल्याण के साथ ही देश का विकास था और उन्होंने राजनीतिक शक्ति का उपयोग एक साधन के रूप में किया। लेकिन धीरे–धीरे राजनीति का उद्देश्य या लक्ष्य परिवर्तित हो गया।
- आज, राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना ही नेताओं का प्राथमिक उद्देश्य है और इसे प्राप्त करने के लिए, वे सभी प्रकार के अनुचित तरीकों का उपयोग करने के लिए तैयार रहते हैं।
- चुनाव जीतने के लिए वे खुले तौर पर धन शक्तियों, और मांसपेशियों की शक्ति का उपयोग करते हैं।
- वे अपवित्र और अप्रत्याशित गठबंधन में प्रवेश करते हैं, हमेशा अन्य राजनीतिक दलों को हराने के लिए निम्न स्तर तक चले जाते हैं।
- पार्टियां धर्म एवं जाति का उपयोग एक उपकरण के रूप में करती हैं, हर राजनीतिक दल जाति–राजनीति का खेल खेलता हैं और एक दूसरे पर कीचड फेंकत हैं।
- कई राजनीतिक दल घोटालों के लिए भी जिम्मेदार है।
- आत्म उन्नति जीवन का सिद्धांत बन गया है और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए राजनीतिक शक्ति का उपयोग किया जाता है।

विचारधारा का पतन

- राजनीतिक दल चुनाव के लिए लोगों को तैयार करते हैं, चुनाव जीतने के बाद सरकार बनाते हैं और देश का प्रशासन चलाते हैं।
- विपक्षी दल सरकार की आलोचना नैतिक मूल्यों के आधार पर नही, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सरकार बनाने के लिए एक वैकल्पिक टीम के रूप में काय के लिय तैयार।
- प्रत्यक राजनीतिक दल की अपनी विचारधारा होती है, जिसके आधार वोट सत्ता में आने के बाद, वे अपनी विचारधारा को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास।
- भारत में, राजनीतिक दलों की विचारधारा में भारी गिरावट आई है।
- सत्ता की लालसा ने लगभग सभी राजनीतिक दलों को अंधा बना दिया है।
- सत्ता में आने के लिए और सत्ता में बने रहने के लिए, राजनीतिक दल अपनी विचारधारा की अनदेखी करके किसी भी राजनीतिक पार्टी के साथ समझौता करने के लिए तैयार।
- सत्ता की प्राप्ति के उपरान्त राजनीतिक दल द्वषभाव के साथ ही बदले की भावना के साथ काय।
- भारत में विचारधारा तीसरे या चौथे स्थान के साथ ही केवल हितों के मामलों से संबंधित।
- राजनीतिक दल आत्म विकसित नीतियां के निर्माण एवं स्वंय केन्द्रित विकास पर अधिक ध्यान।
- चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा जिस तरह की रणनीति लागू की जाती है, उसने जातिवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद और धन के सभी उपयोग, मांसपेशियां की शक्ति और राजनीति के अपराधीकरण को बढ़ा दिया है।
- सत्ता सहभागिता की राजनीति।

भारतीय राजनीतिक परिवेश

- भारतीय राजनीति में कई नकारात्मक प्रवृत्तियां सामने आई हैं, परन्तु इन सबके बावजूद भी इस बात से नकारा नही जा सकता है कि भारतीय राजनीति सकारात्मकता की परिचायक है।
- भारत एक बहुलवादी समाज होने के कारण विभिन्न समूहों, जातियों, धर्मों, अल्पसंख्यकों और विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोगों के कारण भारतीय राजनीति की प्रकृति को प्रभावित किया है, जिससे भारतीय राजनीति की गतिशील प्रकृति और निर्धारक तत्वों के साथ ही नयो प्रवृतियाँ एवं रुझान भी सामने आए हैं, जो भारतीय राजनीति की गतिशीलता को दर्शाता है।
- समाज का सचेत और प्रबुद्ध वर्ग के साथ ही राजनीतिक दलों का काय है कि अनावश्यक बहस से निकल कर भारतीय परिस्थितियों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को मजबूत करने के लिय एक सुनिश्चित व ईमानदार दलीय व्यवस्था के निर्माण के लिय प्रयत्न करें।
- भारतीय राजनीति का पुट राष्ट हित की सर्वोपरिता पर आधारित होकर सामाजिक संरचना के विकासवादी पहलू पर केन्द्रित होना।
- सभी राजनैतिक दलों का फोकस समावेशी विकास एवं सार्वभौमिक पहलूओं पर आधारित होना।
- भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों के साथ ही सहभागी राजनीतिक परिवेश दलों की विश्वसनीयता को मजबूती प्रदान करता है।
- वर्तमान समय की आवश्यकता यह है कि विभाजनकारी प्रवृत्तियां का बारिकी से मूल्यांकन किया जाय और दीर्घकालिक और स्थायो रणनीति को सामाजिक–आर्थिक समस्या से निपटने के लिए तैयार किया जाना चाहिए, तभी हम एक सफल, समतावादी गणराज्य की स्थापना कर पाएंगे।

धन्यवाद